International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
February- 2020, Volume-7, Issue-1
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

महिलाओं की चर्चा की पृष्ठभूमि और महादेवी वर्मा की काव्य रचनाएँ

Nita Samadder
Research Scholar
Dept. of Hindi
Kalinga University Raipur, Chhattisgarh

Dr. Ajay Shukla
Associate Professor
Dept. of Hindi
Kalinga University Raipur, Chhattisgarh

सार

महादेवी वर्मा अपने समय की प्रथम रचनाकार है, जिन्होंने अपनी रचनाओं में स्त्री–जीवन के प्रश्नो को गंभीरता से उपस्थित किया। उनकी काव्य–रचनाओं के केंद्र में तो स्त्री के अंतर्मन की अभिव्यक्ति है ही, अपनी गद्य रचनाओं में भी उन्होनें स्त्री–जीवन की विविध छवियों का अंकन किया है। 'श्रृंखला की कड़ियों' में प्रकाशित निबंधों में भारतीय नारी की समस्याओं पर गंभीर विमर्श है। अपनी इस पुस्तक को जन्म से अभिशप्त, जीवन में संतप्त, किन्तु वात्सल्य–वरदानमयी भारतीय नारी को समर्पित किया है।

मुख्य शब्दः अभिशप्त, नारी, वात्सल्य।

1. प्रस्तावनाः

"जिस दिन एक भारतीय महिला अपनी पूरी शक्ति के साथ जाग सकती है, उस दिन किसी के लिए भी उसके आंदोलन को रोकना संभव नहीं है। उसके अधिकारों के बारे में यह सच है कि वे भीख मांगने से नहीं मिलते, क्योंकि उनका दर्जा विनिमेय वस्तुओं से है। यह भिन्न है। समाज में व्यक्ति का सहयोग और विकास की दिशा में उसका उपयोग उसके अधिकार को निर्धारित करता है और इस प्रकार, हमारे अधिकार हमारी शक्ति और विवेक के सापेक्ष होंगे। इन बंधनों में रहने और उन्हें अपना भाग्य मानने की मानसिकता पर भी हमला होता है और उन्हें जगाने का प्रयास किया जाता है।

इतिहास में महिलाओं की भूमिका का दस्तावेजीकरण करना आसान नहीं है। मुख्यधारा के ऐतिहासिक विवरणों में अधिकांशतः महिलाओं की अदृश्यता से संबंधित ही जानकारी प्रदान की गई है। पिछले कुछ एक दशकों से इस अभाव को दूर करने हेतु विभिन्न विवरणों में महिलाओं की भूमिका की तलाश की जा रही है। महिलाओं द्वारा लिखी गईं आत्मकथाएँ, व्यक्तिगत डायरियाँ, और विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लिखे उनके लेखों ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में भी महिलाओं की किसी तरह भूमिका के लिए इन्हीं तरह के स्रोतों पर ही अधिकांश आश्रित रहना होगा। बाकी के लिए व्यक्तिगत दस्तावेज, प्रकाशित और अप्रकाशित, अभिलेखीय दस्तावेज, समाचार पत्र आदि में भी महिलाओं की गतिविधियों से संबंधित बातें रहती है ।

भारतीय नारी के अवचेतन–मानस में, उसकी आकांक्षाओं में, पुरुषों पर निर्भरता में उसके सपने कैसे खो गए हैं, इस पर विचार करते हुए कि वे अपने अस्तित्व से ही अनभिज्ञ हो गए हैं, वह लिखती हैं – "इस समय में केवल दो लोग हैं। समाज में महिलाओं के प्रकार मिलेंगे – जिन्हें इस बात की जानकारी नहीं है कि वे व्यापक मानव समुदाय के सदस्य हैं और उनका एक ऐसा स्वतंत्र व्यक्तित्व भी है, जिनके विकास के माध्यम से समाज का उत्थान और संकीर्णता से पतन संभव है। जो समभाव करना जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति को उनकी दृष्टि से देखना, उनके गुणों का अनुकरण करना समझते हैं।" सारांश यह है कि एक तरफ ढीले और व्यक्तिगत बंधनों को मजबूत और संकुचित किया जा रहा है।

पुरुष और महिला एक दूसरे के पूरक हैं, लेकिन उनकी शारीरिक और मानसिक संरचना अलग है। "महिलाओं का मानसिक विकास पुरुषों के मानसिक विकास से भिन्न होता है, लेकिन अधिक तीव्र प्रकृति, अधिक कोमल और प्रेम–घृणा की भावनाएँ अधिक तीव्र और स्थायी होती हैं। इन विशेषताओं के अनुसार, उनका व्यक्तित्व समाज के उन लोगों को विकसित और पूरा करता है, जिनकी पूर्ति ।" पुरुष–प्रकृति से यह संभव नहीं है। इन दोनों प्रकृतियों में उतना ही अंतर है जितना बिजली और गड़गड़ाहट में। एक से शक्ति उत्पन्न की जा सकती है, महान कार्य किए जा सकते हैं, लेकिन प्यास नहीं बुझाई जा सकती। एक ऐसे रिक्त स्थान को भर देता है जिससे विभिन्न सामाजिक सम्बन्धों में सामंजस्य स्थापित हो जाता है और वह पूर्ण हो जाता है।

महादेवी वर्मा की नारी चेतना को उनके उपरोक्त कथन को ध्यान में रखकर ही देखा और परखा जा सकता है। आज के दौर में भारत और पश्चिमी देशों में महिलाओं का विमर्श अपने स्वरूप में स्पष्ट नहीं है। इसका एक रूप सामाजिक बंधनों से पूरी तरह मुक्त महिला की मुक्त छवि है, जो बाजार द्वारा बनाई गई है। वह अपने शरीर की स्वामी है और अपने शरीर को एक वास्तु के रूप में देखती है। "मांस की क्रांति ने महिला को अपने पक्ष में सभी विकल्प नहीं सौंपे हैं। बाजार ने देह का मालिक बनने और देह की छवि से पैसा कमाने की चाहत को भुनाया है। महिला की इन आजादी को सेक्स इंडस्ट्री ने हड़प लिया है। और महिला फिर से खेल बन गई।"

पुरूष ने अपने 'पौरूषीय बदला' के लिए उसी देह का 'विषकन्या' की तरी इस्तेमाल किया और 'हमजद' जैसी रचनाओं का जन्म हुआ। सेक्स, शोषण का औजार बनी रही, कुछ रूप बदल कर और कुछ मन दबाकर।'

महादेवी वर्मा ने अपने निबंध 'आधुनिक नारी' उसकी स्थिति पर एक दृष्टि' में पश्चिम में स्त्री के जीवन में हो रहे परिवर्तनों को परखते हुए कहा है–''आधुनिकता की वायुमें पली स्त्री का यदि स्वार्थ में केन्द्रित विकसित रूप देखना हो तो हम उसे पश्चिम में देख सकेंगे। स्त्री वहॉ आर्थिक दृष्टि से स्वतं. हो चुकी है, अतः सारे सामाजिक बंधनों पर उसका अपेक्षाकृत अधिक प्रभुत्व कहा जा सकता है। उसे पुरूष के मनोविनोद की वस्तु बने रहने की आवश्यकता नहीं है, अतः वह चाहे तो परम्परागत रमणीत्व को तिलांजली देकर सुखी हो सकती है, परन्तु उसकी स्थिति क्या प्रमाणित कर सकेगी कि वह आदमी नारी की दुर्बलता से रहित है? संभवतः नहीं। श्रृंगार के इतने संख्यातीत उपकरण, रूप को स्थिर रखने के लिए इतने कृत्रिम साधन, आकर्षित करने के उपसाह–योग्य प्रयास आदि और क्या इस विषय में कोई संदेह का स्थान रहने देते हैं?"

महादेवी वर्मा की दृष्टि में स्त्री–चेतना का जो रूप है, वह निश्चित रूप से पश्चिम से आयातित स्त्री–विमर्श से सर्वथा भिन्न है, वह विद्रोहिणी होकर भी समाज से विमुख नहीं है। वह मनुष्य के रूप में अपनी उपस्थिति की आग्रही है, उसकी आकांशा बस इतनी–सी है कि उसे बंदिनी नहीं अपने प्रियतम की सहचरी का स्थान मिले, सामाजिक रूप से एक इकाई के रूप में देखा जाये न की किसी पुरुष की छाया बन कर अपना सम्पूर्ण जीवन गुज़ारने के लिए अभिशिप्त हो। 'घर और बाहर' शीर्षक निबंध में उन्होनें एक स्त्री की घर की देहरी से लेकर समाज में उसकी सक्रीय भूमिका को स्पष्ट किया है। अपनी इस भूमिका को प्राप्त करने के लिए वह संघर्ष कर रही है और इसमें वह सफल भी हो रही है। भारतीय स्वतंत्रता–संग्राम ही नहीं जीवन के अन्य क्षेत्रों में उनकी संख्या बढ़ रही है। "वास्तव में स्त्री भी अब केवल रमणी या भार्या नहीं रही, वरन घर के बाहर भी समाज का एक विशेष अंग तथा महत्वपुर्ण नागरिक है, अतः उसका कर्तव्य भी अनेकानेक हो गया है, जिसके पालन में कभी–कभी ऐसे संघर्ष के अवसर आ पड़ते हैं, जिसमें किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाना पड़ता है। वह क्या करे और क्या न करे? उसका कार्य–क्षेत्र केवल घर है या बहार या दोनों ही, इस समस्या का अब तक कोई समाधान नहीं हो सका है।"

स्त्री–जीवन की समस्याएँ क्या हैं? उसकी वेदना,पीड़ा और व्यथा के मूल कारण क्या है? एक स्त्री पुरुष और समाज से क्या चाहती है?इन प्रश्नों का उत्तर बस यही है कि वह एक मनुष्य के रूप में अपनी उपस्थिति की स्वीकृति चाहती है। उसकी पीड़ा और व्यथा का मूल कारण यही है। वह जननी, माता, पत्नी, भगनी, पुत्री आदि किसी रूप से विरक्त होकर अपनी आजादी नहीं चाहती, परन्तु अपनी इन भूमिकाओं तक ही सिमित जीवन को अपना सम्पूर्ण जीवन नहीं मानना चाहती। "पुरुष के समान स्त्री भी कुटुम्भ,समाज,नगर तथा राष्ट्र की विशिष्ट सदस्य है तथा उसकी प्रत्येक क्रियासबके विकास में बढ़ा भी दाल सकती है और उनके मार्ग को प्रशस्त भी कर सकता है। प्रायः पुरुष का जीवन अधिक स्वच्छन्द वातावरण में विशिष्ट व्यक्तियों के संसर्ग द्वारा बनता है और स्त्री का संकीर्ण सीमा में परम्परागत रूढ़ियों से जिससे न उसे अपने कुटुम्भ से बाहर किसी वस्तु का अनुभव होता है, न अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान। कहीं यह विषमता और कही इसकी प्रतिक्रिया जीवन को एक निरर्थक रणक्षेत्र बनाकर उसकी साड़ी उर्वरता को नष्ट तथा सरसता को शुष्क किये दे रही है।" महादेवी वर्मा के उक्त कथनों में ही उनकी स्त्री–चेतना का मूल भाव व्याप्त है।

उनकी काव्य–रचनाओं में स्त्री–चेतना की अभिव्यक्ति वेदना, पीड़ा, व्यथा आदि भावनाओं की ओट में छिपी है। स्त्री जिसे अपना हृदय अर्पित करना चाहती है,उस काम्य पुरुष को जिसे छायावादी शब्दावली में आलोचकों ने 'अज्ञात प्रियतम' कहा है। वह उसकी सहचरी बनकर जीना चाहती है, उसके लिए एक दीपक की भाँती जलकर उसके पथ को आलोकित करना चाहती है। वह सदियों से उसका साथी रहकर भी उसके हृदय से अनुपस्थित है –

"मधुर मधुर मेरे दीपक जल !

युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,

प्रियतम का पथ आलोकित कर !

सौरभ फैला विपुल धुप बन,

मृदुल मोम–सा घुल रे,मृदु तन;

दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,

तेरे जीवन का अणु गल गल !

पुलक–पुलक मेरे दीपक जल!"

स्त्री जिसे व्यथा सुनाना चाहती है,जब उसे ही उसकी व्यथा सुनने का अवकाश नहीं है तो वह क्या करे? अपनी व्यथा किसे सुनाये–

"झप चली पलकें तुम्हारी पर कथा है शेष!

अतल सागर के शयन से,

स्वप्न के मुक्ता–चयन से,

विकल कर तन,

चपल कर मन,

किरण–अंगुलि का मुझे लाया बुला निर्देश!

मौन जग की रागिनी थी,

व्यथित रज उन्मादिनी थी,

हो गया क्षण,

अग्नि के कण,

ज्वार ज्वाला का बना जब प्यास का उन्मेष!"

स्त्री के प्राण आज भी विकल है, वह अपने सीमित जीवन के पार देखना चाहती है। अपने जीवन को विस्तार देना चाहती है –

"फिर विकल हैं प्राण मेरे!

तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी देख लूँ उस ओर क्या है!

जा रहे जिस पंथ से युग कल्प उसका चोर क्या है ?

क्यों मुझे प्राचीर बन कर

आज मेरे श्वास घेरे?

सिंधु की निःसीमिता पर लघु लहर का लास कैसा?

दीप लघु शिर पर धरे आलोक का आकाश कैसा?

दे रही मेरी चिरन्तनता

क्षणों के साथ फेरे !"

युगों से अपनी व्यथा का भार धोती स्त्री आज भी मुक्त नहीं हो पा रही है। उसकी करुण पुकार की प्रतिध्वनि दिगन्त में व्याप्त है, कोई प्रयुत्तर नहीं–

"टूटी है कब तेरी समाधि,

झंझा लौटे शत हार–हार;

बह चला दृगों से किन्तु नीर;

सुनकर जलते कण की पुकार,

सुख से विरक्त दुख में समान !

मेरे जीवन का आज मूक,

तेरी छाया से हो मिलाप;

तन मेरी साधकता छू ले,

मन ले करुणा की थाह नाप !

उर में पावस दृग में विहान !"

वह जिसे जगाना चाहती है वह तो बेसुध सोया हुआ है, स्त्री के सारे प्रयत्न व्यर्थ हुए–

"जाग बेसुध जाग!

अश्रुकण से उर सजाया त्याग हीरक–हार,

भीख दुख की मांगने फिर जो गया प्रतिद्वार;

शूल जिसने फूल छू चन्दन किया संताप,

सुन जगाती है उसे सिद्धार्थ की पद–चाप;

करुणा के दुलारे जाग।"

स्त्री अपने प्रियतम को, जिसकी स्मृति धुंधली–सी, अनजान–सी सुधि है, जो उसी में खोया हुआ है, जो उसके मन–प्राणों में ही बसा हुआ है। उस तक वह किस प्रकार अपना सन्देश किसके द्वारा कहाँ और किसे पढ़ाये–

"अली कहाँ सन्देश भेजूँ?

मैं किस सन्देश भेजूँ ?

एक सुधि अनजान उनकी,

दूसरा पहचान मन की,

पुलक का उपहार दूँ या अश्रु–भार अशेष भेजूँ ?

चरण चिर पथ के विधाता

उर अथक गति माप पाता,

अमर अपनी खोज का अब पूछने क्या शेष भेजूँ?

नयन–पथ से स्वप्न में मिल,

प्यास में धुल साध में खिल,

प्रिय मुझी में खो गया अब दूत को किस देश भेजूँ ! "

स्त्री की व्यथा और वेदना का यह ज्ञान उसका एकालाप संवाद नहीं है। इसमें अपने अस्तित्व–प्राप्ति का विकल राग भी व्याप्त है। महादेवी वर्मा अपनी काव्य–रचनाओं में स्त्री–चेतना के लिए वह पाठ रचती हैं, जिसमें स्त्री–चेतना के बंद कपाट को खोलने का आह्वान है। इसलिए वर्तमान स्त्री–विमर्श के सूत्र उनकी रचनाओं में व्यक्त स्त्री–चेतना से किसी–न–किसी रूप में अवश्य जुड़ जाते हैं।

2. शिक्षा और आर्थिक स्वावलंबन का प्रश्नः

आर्थिक रूप से पर निर्भरता भारतीय–स्त्री के जीवन का सबसे कठिन प्रश्न रहा है। आज भी अधिकांश स्त्रियों का जीवन इसी प्रश्न के वलयाकार वृत से मुक्त नहीं हो स्का है। महादेवी वर्मा ने जिन दिनों स्त्री–जीवन की आर्थिक मुक्ति का स्वपन देखा था, उन दिनों यह स्थिति और भी कठिन थी। विशेष रूप से घरों तक ही सिमित स्त्री शिक्षा और आर्थिक स्वावलम्बन के प्रश्न से स्वयं ही विमख थी।

महादेवी वर्मा स्त्री की दयनीय दशा के लिए अशिक्षा को एक मुख्य कारन मानती हुई कहती है –"शिक्षा के नितांत आभाव और परिस्थितयों की विषमता के कारण काम स्त्रियाँ इस प्रगति को अपना सकीं और जिन्होनें इन बाधाओं से ऊपर ऊठकर इसे अपनाया बह उन्हीं इसका बाह्म रूप ही अधिक आकर्षक लगा। भारतीय स्त्री ने भी अपने आपको पुरुष की प्रतिद्वंद्विता में पूर्ण दिखने की कल्पना की, परन्तु केवल इसी रूप से उसकी चिंतन नारी–भावना संतुष्ट न हो सकी।"

पुरुष–वर्चस्ववादी सोच में पूर्णतः जकड़ी भारीतय–स्त्री सामाजिक रूढ़ियों और परम्परागत संस्कारों के कारन अपने पांवों की बेड़ी को आभूषण मान बैठी थी। "एक ओर परंपरागत संस्कार ने उसके हृदय में यह भाव भर दिया की पुरुष विचार, बुद्धि और शक्ति में उससे श्रेष्ठ है तो दूसरी ओर उसके भीतर की नारी–प्रवृत्ति भी उसे स्थिर नहीं रहने देती। इन्हीं दोनों भावनाओं के बिच में उसे ऐसी आस्चर्यजनक क्षमता का परिचय देना है जो उसे पुरुष के समकक्ष बैठा दे।"

इस कठिन चुनौती को स्वीकार किये बिना स्त्री–जीवन की मुक्ति संभव नहीं है। जिन दिनों महादेवी वर्मा ने स्त्री–प्रश्नों को केंद्र में रखकर श्रृंखला की कड़ियाँ के निबंधों को लिखा, उन दिनों स्त्री–शिक्षा की दशा कितनी बदहाल थी, इसे उनके व्यक्त विचार से समझा जा सकता है–"शिक्षा की दृष्टि से स्त्रियों में दो प्रतिशत भी साक्षर नहीं है। प्रथम तो माता–पिता कन्या की शिक्षा के लिए कुछ व्यय ही नहीं करना चाहते, दूसरे यदि करते भी हैं तो विवाह की हाट में उनका मूल्य बढ़ाने के लिए, कुछ उनके विकास के लिए नहीं।"

3. निष्कर्ष

महादेवी जी की काव्य–राचाओं पर सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ा था। कविताएँ तप रचनाकार की भाव–संपदा से सृजित होती है , परन्तु विचार के क्षणों में रचनाकार अपने आस–पास के जीवन और समाज को जिन अभावों से ग्रस्त पाता है, उन विषम परिस्थितियों पर विमर्श की मनः स्थिति में निबन्धादि की भी रचना करता है। महादेवी जी ने इन्हीं क्षणों में स्त्री–जीवन की दयनीय जीवनावस्था में उनकी आर्थिक पर निर्भरता पर विचार करते हुए स्त्री–समस्याओं पर केंद्रित 'स्त्री के अर्थ–स्वातंत्र्य का प्रश्न' शीर्षक निबंध दो खण्डों में लिखा जो उनकी 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में संकलित है।

4. सन्दर्भ सूची

- श्रृंखला की कड़ियाँ– महादेवी वर्मा, पृष्ठ–9
- श्रृंखला की कड़ियाँ– महादेवी वर्मा,पृष्ठ–14
- श्रृंखला की कड़ियाँ– महादेवी वर्मा,पृष्ठ–12
- स्त्री : मुक्ति का सपना – संपादक अरविन्द जैनरू लीलाधर मंडलोई पृष्ठ –111
- श्रृंखला की कड़ियाँ– महादेवी वर्मा,पृष्ठ–44–45
- श्रृंखला की कड़ियाँ– महादेवी वर्मा,पृष्ठ–56

- श्रृंखला की कड़ियाँ– महादेवी वर्मा,पृष्ठ–19
- दीपशिखा – महादेवी वर्मा,पृष्ठ–74
- सांध्यगीत–महादेवी वर्मा,पृष्ठ–51
- सन्धिनी –महादेवी वर्मा,पृष्ठ–103
- सन्धिनी –महादेवी वर्मा,पृष्ठ–83
- सन्धिनी –महादेवी वर्मा,पृष्ठ–125
- श्रृंखला की कड़ियाँ– महादेवी वर्मा,पृष्ठ–47
- श्रृंखला की कड़ियाँ– महादेवी वर्मा,पृष्ठ–85